International Journal of Advancement in Social Science and Humanity http://www.ijassh.in

(IJASSH) 2017, Vol. No. 3, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722

COMPARATIVE STUDY OF SADISM OF BUDDHA

Dr. Pratibha Pathak

Associate Professor, Ancient History
Mahavidyalay Bhatwali Bazar (Unwal), Gorakhpur College, Gorakhpur

बुद्ध के दुःखवाद का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ प्रतिभा पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास,
महाविद्यालय भटवली बाजार(उनवल)गोरखपुर।

ABSTRACT

Modern society is full of sorrows. Material prosperity has converted sorrows into happiness. But still there is sorrow in the society, the nation, and the whole world. You can hardly find such a human being who has not suffered. Various philosophers, psychologists, sociologists, economists, political scientists etc. have told this state of sorrow to be the cause of sorrow. And the remedy for its solution has also been told, but still there is sorrow on earth. No society, be it East or West, is not free from sorrows. Suffering pervades from birth to death

सन्दर्भ

आधुनिक समाज दुःखों से परिपूर्ण है। भौतिक समृद्धि ने दुःखों को सुखों में परिवर्तित किया है,परन्तु फिर भी समाज, राष्ट्र, और सम्पूर्ण विश्व में दुःख व्याप्त है। शायद ही ऐसा मानव आप खोज पाएँ जो दुःख न झेला हो। दुःख की इस स्थिति को विभिन्न दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों,राजनीतिक शास्त्रियों आदि ने विभिन्न कारणों को दुःख का कारण बताया है और उसके निराकरण का उपाय भी बताया है लेकिन फिर भी पृथ्वी पर दुःख व्याप्त है। कोई भी समाज चाहे वह पूरब की हो या पश्चिम की, दुःखों से मुक्त नहीं है। जन्म से मृत्यु तक दुःख व्याप्त है।

परिचय

जीवन में अनेक प्रकार के दुःख हैं। बुद्ध कहते हैं– ''जन्म में दुःख है, नाश में दुःख है, रोग दुःखमय है, मृत्यु दुःखमय है, अप्रिय से संयोग दुःखमय है, प्रिय का वियोग

दुःखमय है। संक्षेप में राग से उत्पन्न पंचस्कंध दुःखमय है।'' यह संसार दुःखमय है इसमें किसी को अस्वीकार नहीं है। क्षणिक सुख भी कुछ समय के पश्चात् दुःख में ही परिवर्तित दिखाई देता है इसलिए सुख की अंतिम स्थिति भी दुःख है। समाज में हिंसा, घृणा, उत्पीड़न, द्वेष आदि सभी प्रकार की विकृतियाँ पाई जाती है। ये सब दुःख के ही परिणाम हैं। पागलखाने से लेकर चिकित्सालय तक, घर से लेकर श्मशान तक हर जगह दुःख ही दुःख दृष्टिगोचर होता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर दुःख को बुद्ध ने आर्य सत्य की संज्ञा दी।

अब प्रश्न उठता है कि दुःख क्या है ? दुःख एक ऐसी भावना, संवेदना है जो हमारे मन और शरीर पर नकारात्मक प्रभाव डालती है फिर वह धीरे–धीरे समाज, राष्ट्र को भी प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, शोषण, हिंसा आदि विभिन्न विकृतियों का जन्म होता है। साधारण भाषा में किसी भी प्रतिकूल वेदना को चाहे वह शारीरिक हो अथवा मानसिक, दुःख कहा जाता है।

मनुष्य के दुःख के कारण असीम हैं। ऐसा लगता है दुःखी होना मनुष्य का स्वभाव बन चुका है। क्योंकि मनुष्य स्वयं के दुःख या अभाव से उतना दुःखी नहीं जितना वह दूसरे के सुख और सफलताओं से स्वयं को दुःखी करता है। वस्तुतः संसार की कोई भी पदार्थ, व्यक्ति या स्थिति–परिस्थिति अपने आप में दुःख और सुख नहीं दे सकती बल्कि मानव मन,स्वभाव,संस्कार,कृत्य,व्यवस्था आदि इसके कारण हैं।

कार्ल मार्क्स,सिग्मण्ड फ्रायड और महात्मा बुद्ध ने दुःख है, मानव जीवन इन दुःखों से पीड़ित है, यह माना है। लेकिन इसके कारणों पर मतभेद है। जहाँ मार्क्स दुःख के कारण आर्थिक विषमता मानते हैं वहीं फ्रायड दुःख के कारण मनोवैज्ञानिक मानते हैं तो बुद्ध दुःख के कारण अज्ञानता/तृष्णा को मानते हैं। यही शोध पेपर का मूल तत्व है जिसे इन तीनों चिंतकों,दार्शनिकों, विचारकों के माध्यम से जानने का प्रयास है।

कार्ल मार्क्स आधुनिक समाजवाद या साम्यवाद के जनक हैं जिन्होंने समाजशास्त्र को भी काफी प्रभावित किया है। वे अपने सिद्धान्तों को वैज्ञानिक स्वरूप मानते थे। वे समाज को दो वर्गों में विभक्त किया था –मालिक और मजदूर। उन दोनों वर्गो के बीच

(IJASSH) 2017, Vol. No. 3, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

हमेषा संघर्ष चलता रहता है। मजदूरों का शोषण मालिकों के द्वारा किया जाता है। फलतः समाज में दो वर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। एक सुख से अपने जीवन को व्यतीत करता है और दूसरा दुःखों को झेलने को विवश हो जाता है। संपति के व्यक्तिगत स्वामित्व से एक वर्ग को बल मिलता है तो दूसरे वर्ग को दुःख पहुँचता है। समाज के भलाई के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्तिगत संपति का उन्मूलन करके दुःख का निराकरण किया जाए। प्रत्येक समाज में सहयोग और संघर्ष पाया जाता हैं। सहयोग जीवन में एकमत, एकीकरण और संगठन का विकास करता है, जबकि संघर्ष दमन, विरोध तथा हिंसा की उत्पत्ति करता हैं। मार्क्स ने बताया है कि पुराने समाज के अन्त तथा नए समाज के जन्म के लिए संघर्ष आवश्यक हैं। वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना पर बल देते हैं। मार्क्स ने आधुनिक मजदूर वर्ग को वह क्रांतिकारी ताकत बताया, जो समाज और पूँजीवाद से साम्यवाद की ओर ले जाएगा और इसकी शुरूआत समाजवाद हैं। मार्क्स ने इस सिद्धान्त पर बल दिया कि मनुष्य की सारी समस्याएँ इहिलौकिक हैं। समाज की कोई भी अवस्था चिरस्थायी नहीं हैं और सामाजिक परिवर्त्तन में आर्थिक या भौतिकता का महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इसी सिद्धान्त के आधार पर मार्क्स ने धार्मिक रूढ़ियों व अंधविश्वासों का खंडन किया। इस प्रकार कार्ल मार्क्स दुःख के कारण आर्थिक को मानते हैं।

सिग्मण्ड फ्रायड मूल रूप से मौलिक मनोवैज्ञानिक हैं जिन्होनें मानव मन को गहरे अर्थो में अध्ययन किया है। उनका मानना है कि दुःख का कारण मनोवैज्ञानिक है। मन मस्तिष्क की उस क्षमता को कहते हैं जो मनुष्य को चिंतनशक्ति, स्मरणशक्ति, निर्णयशक्ति, बुद्धि, भाव आदि को सक्षम बनाती है। सामाजिक मनोविज्ञान किसी व्यक्ति द्वारा विभिन्न सामाजिक परिस्थितयों में उसके मानसिक व्यवहार का अध्ययन करती है। फ्रायड कहते हैं कि मनुष्य दुःखी है क्योंकि उसने अपने वृत्तियों को दबा दिया है उसकी दबी हुई इच्छाएँ वृत्ति, दुःख उत्पन्न करती है। फ्रायड ने मन या व्यक्त्वि के स्वरूप को गत्यात्मक माना हैं। उनके अनुसार व्यक्तित्त्व हमारे मस्तिष्क एवं शरीर की क्रियाओं का नाम है।

फ्रायड का मानना था कि वयस्क व्यक्ति के स्वभाव में किसी प्रकार का परिवर्तन लाना संभव नहीं क्योंकि व्यक्तित्व की नींव बचपन में ही पड़ जाती हैं। अतः दुख के कारण के बाद फ्रायड आगे नहीं बढ़ पाते। उन्होंने दुःख का कारण मनोवैज्ञानिक माना।

महात्मा बुद्ध दुःख के कारण अज्ञानता को मानते हैं। तृष्णा दुःख का कारण है। कामतृष्णा दुःख का कारण है, भवतृष्णा दुःख का कारण है, विभवतृष्णा दुःख का कारण है। यह तृष्णा ही समस्त दुःखों का कारण है। हिंसा, उपद्रव, असत्य, परिग्रह आदि विकारों की जननी है। समस्त पापकर्मो का उद्भव यही तृष्णा है। तृष्णामूलक यह संसार है। तृष्णा ही दुःखों का कारण है संसार के विषयों के प्रति जो तृष्णा है वही ''दुःखसमुदय आर्य सत्य'' है। यह संसार जो जन्म, जरा एवं मृत्यु से उक्त हैं, दुःख के अधीन हैं। चूँकि सब वस्तुएँ अस्थायी है, इसीलिए दुःख हैं।

संसार में दुःख व्याप्त है इसमें न ही मार्क्स को न ही फ्रायड को और न ही बुद्ध को इंकार है बल्कि बुद्ध तो इसे आर्य सत्य की संज्ञा देते हैं। फिर इसके कारणों पर मतभेद है। स्वभावतः जब कारण भिन्न होंगे तो उसका समाधान भी भिन्न होगा। जहाँ मार्क्स कारणों को आर्थिक मानते हैं वहीं फ्रायड मनोवैज्ञानिक तो बुद्ध तृष्णा को कारण मानते है। इस दुःख से मुक्ति हेतु भी विभिन्न मत प्रचारित है। मार्क्स अर्थ का समान रूप से वितरण कर दुःखों से निपटने की बात करते हैं। वे उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण अर्थात् व्यक्तिगत संपत्ति का उन्मूलन करके उसका निराकरण की बात करते हैं परंतु व्यावहारिक तौर पर यह असफल ही प्रतीत होता है। फिर फ्रायड ने वृत्तियों के खुली छुट के हिमायती दिखाई देते हैं पर वे स्वयं कहते हैं कि अगर आदमी को बिल्कुल खुला छोड़ दिया जाए तो वे हिंसा करेंग, क्योंकि मानव के अंदर हजारों तरह की जानवर वृत्तियाँ हैं। अगर दबाओ, ढंग का बनाओ, सज्जन बनाओ तो दमन हो जाएगा। यदि दमन होगा तो दुःख होगा क्योंकि वृत्तियाँ पूरी नहीं होती। पूरी करें तो मुसीबत न पूरी करें तो मुसीबत। तो फ्रायड ने अंत में कहा कि आदमी जैसा है कभी सुखी हो ही नहीं सकता। सुख असंभव है।

फ्रायड और मार्क्स का चिंतन दुःखों के पूर्णतः निवृत्ति के साधन उपलब्ध नहीं करा पाते ये उनकी सिद्धान्त की विफलता है। यदि मार्क्स सही होते तो रूस में नए समाज का प्रार्दुभाव होता परन्तु ऐसा नहीं हुआ। हिंसा हुई,रक्तपात हुआ, बदलाव हुआ पर मार्क्स के विचार के अनुरूप नहीं। तभी तो गाँधी कहा करते थे कि हिंसा के बल पर किया गया बदलाव स्थायी नहीं होता। फ्रायड भी मनोवृत्तियों के आगे निदान नहीं खोज पाए। परन्तु बुद्ध ने दुःख से निवृति हेतु ''चतुर्थ आर्य सत्य'' का प्रतिपादन किया। उन्होंने दुःख से मुक्ति संभव है, यह कहा। सारी क्रांतियाँ व्यर्थ साबित हुई परन्तु बुद्ध की क्रांति अब भी सार्थक और प्रासंगिक है। उन्होंने दुःख से मुक्ति हेतु ''अष्टांगिक मार्ग'' का प्रतिपादन किया। जिसका पालन करके कोई भी मानव दुःख से मुक्त हो सकता है। बुद्ध ने इसे स्वयं के जीवन से भी सिद्ध किया। बुद्ध इतिहास के पहले धर्मवैज्ञानिक समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक हैं जिन्होंने समाज को दुःख से मुक्ति हेतु युक्ति दी और आज भी यह उतना ही नूतन और प्रासंगिक हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। बुद्ध प्रायः कहा करते थे–''भिक्षुओं मैं दो बातों का ही उपदेश देता हूँ –दुःख और दुःखनिरोध।'' दुःख संसार है और दुःखनिरोध निर्वाण। रीज डेविड्स ने निर्वाण को इस प्रकार व्यक्त किया है–''निर्वाण मन की पापहीन शान्तावस्था के समरूप है जिसे सबसे अच्छी तरह पवित्रता पूर्ण शांति शिवत्व और प्रज्ञा कहा जा सकता है।'' निर्वाण में समस्त दुःखों का अन्त हो जाता है क्योंकि इसके कारण का अंत हो जाता है। अतः दुःख के समस्या का निदान बुद्ध के पास उपलब्ध है जो अष्टांगिक मार्ग है।

सृष्टि एवं जीवन की व्यवस्था में कोई दुःख नहीं, सामाजिक व्यवस्था ने अज्ञान के कारण हमें जो दुःख दिए हैं उनका समाधान सृष्टि एवं जीवन की व्यवस्था समझकर एवं अपनाकर किया जा सकता हैं। वास्तव में न सुख प्राकृतिक है न दुःख, ये दोनों कृत्रिम हैं क्योंकि यह कारण–कार्य पर निर्भर हैं। एक समान परिस्थिति में कोई दुःख का अनुभव कर सकता है, कोई सुख का तो कोई शांत रह सकता है। मार्क्स, फ्रायड और बुद्ध के माध्यम से इस दुःख की प्रकृति एवं समाधान को समझ सकते हैं।

मानव जीवन दुःखों से पूर्ण है। फलतः इससे समाज में कई तरह की कुरीतियाँ आदि व्याप्त है। यदि ठीक से समस्या को समझा जाए और उसका निदान किया जाए तो

संभव है हम मानव जीवन को एक सुखी और सुन्दर जीवन जीने हेतु वातावरण तैयार कर सकते हैं जिसमें समृद्धि, शांति, अहिंसा आदि कुशल कर्म ही शेष होंगे। वर्तमान में विभिन्न मतों आदि के कारण जो समस्या है उसका निराकरण संभव हैं। मानव का जीवन यदि दुःखों से निवृत्त होगा तो प्रकृति के सभी क्षेत्रों में संतुलन बना रहेगा और हम ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'' को चरितार्थ और सार्थक कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1. *महासार जातक, जातक संख्या 92*
2. *सोनक जातक, जातक संख्या 529, खण्डहाल जातक*
3. *कासाव जातक, जातक संख्या 221*
4. *.महाजनक जातक, जातक संख्या 536*
5. *अंगुत्तर निकाय, हि0अ0 पृष्ठ 235*
6. *अंगुत्तर निकाय, हि0अ0 भाग 2, पृष्ठ 250*
7. *थेरीगाथा, लोक नं0 263*
8. *थेरीगाथा, लोक नं0 266, राण्हनुपुर सुवण्णण्डिता, सोभते तु जंघा पुरे मम।*
9. *महाउम्मग्ग जातक, जातक संख्या 546*
10. *विनयपिटक, महावग्ग, 5/2/11*
11. *भूरिदत्त जातक, जातक संख्या 543*
12. *महावेस्सन्तर जातक, जातक संख्या 547*
13. *महाउम्मम्ग जातक, जातक संख्या 546*
14. *कुस जातक, जातक संख्या 531*
15. *विनयपिटक, चुल्लवग्ग, 5/1/2*

REFERENCES

1. Mahasaar Jatak, Jatak No. 92
2. Sonak Jatak, Jatak No. 529, Khandhaal Jatak
3. Kasav Jatak, Jatak No. 221
4. Mahajanak Jatak, Jatak No. 536
5. Anguttar Nikay, H. A. pg 235
6. Anguttar Nikay, H. A. Part -2, pg 250
7. Therigatha, Lok No. 263
8. Therigatah, Lok No. 266, Ranhanupur Suvandita, Sobhte tu jangha pure mam
9. Mahaummagg Jatak, Jatak No. 546
10. Vinaypitak, Mahavagg, 5/2/11
11. Bhooridutt Jatak, Jatak No. 543
12. Mahavessentar Jatak, Jatak No. 547

13. Mahaummagg Jatak, Jatak No. 546
14. Kus Jatak, Jatak No. 531
15. Vinaypitak, Chullvagg, 5/1/2